बुद्धवर्ष २५५०, ज्येष्ठ पूर्णिमा, ११ जून, २००६ वर्ष ३५ अंक १२

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-
आजीवन शुल्क रु. ५००/-

Hindi Patrika on Website: www.vri.dhamma.org/NewslettersHindi/index.html

धम्मवाणी

चिरं तिट्ठतु लोकस्मिं, सम्मासम्बुद्धसासनं।
तस्मिं सगारवा निच्चं, होन्तु सब्बेपि पाणिनो॥
सुमेधा थेरीगाथा वण्णना.

लोक में सम्यक्‌सम्बुद्ध का शासन चिरकालतक रहे। उसमें सभी प्राणी नित्य गौरवान्वित होवें।

विश्व विपश्यनाचार्य श्री गोयन्काजी की श्रीलंका यात्रा – १० से १९ मई, २००६

विश्व के अनेक बुद्धानुयायी देशों की भांति श्रीलंका सरकार ने भी भगवान बुद्ध के महापरिनिर्वाण की २५५० वीं जयंती को भव्यरूप से राष्ट्रीय स्तर पर मनाने का आयोजन किया। इस अवसर पर पूरे विश्व में विपश्यना द्वारा अभूतपूर्व रूप से लाभान्वित हुए लोगों को ध्यान में रखते हुए सरकार ने **विश्व विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायणजी गोयन्का** को विशिष्ट राज्य-अतिथि के रूप में निमंत्रित कर सम्मानित करने का निर्णय किया। पूज्य गुरुदेव को श्रीलंका आने के लिए पहले भी साधकों के कई आमंत्रण मिल चुके थे परंतु बहुत चाहते हुए भी वे अनेक कारणों से वहां नहीं जा पाये थे। इससे पूर्व वे ८० और ९० के दशकों में श्रीलंका में शिविर-संचालन हेतु गये थे और श्रीलंका की विस्तृत धर्म-यात्रा भी की थी। कुछ वर्ष पूर्व उन्होंने विश्व के एक बहुत बड़े भूभाग की यात्रा भी की थी। परंतु बढ़ती हुई उम्र और खराब स्वास्थ्य के कारण अब वैसी यात्रा करना संभव नहीं रहा। अत्यंत आवश्यक काम निपटाने के लिए भी समय नहीं मिल पाता है। फिर भी इस बार सरकार के आमंत्रण को स्वीकार करते हुए उन्हें बहुत प्रसन्नता हुई।

नब्बे के दशक में जब वे श्रीलंका गये तब भंते सिद्धार्थ रतवत्ते तथा श्रीमती दमयंती रतवत्ते के प्रयासों और स्थानीय साधकों के सहयोग से कैंडी के निकट हरेभरे पहाड़ी वनप्रदेश में 'धम्मकूट' विपश्यना केंद्र की स्थापना हुई, जहां नियमित शिविर लगने लगे हैं। कोलंबो के निकट लगभग एक घंटे की दूरी पर एक अन्य केंद्र के लिए जमीन का दान मिला था परंतु अभी तक वहां कोई निर्माणकार्य नहीं हो सका था। पूज्य गुरुजी के श्रीलंका पधारने के समाचार ने साधकों में उत्साह जगाया और वे 'धम्मसोभा' नामक इस दूसरे केंद्र के निर्माण में जुट गये। भिक्षु आचार्य भदंत रतनपालजी की देखरेख में यहां निर्माणकार्य प्रगति पर है। यह केंद्र भी चारों ओर से हरियाली से घिरी एक मध्यम आकार की ऊंची पहाड़ी पर स्थित है।

धम्मसोभा के निर्माणकार्य के लिए जब एक स्मारिका प्रकाशित करने का निर्णय हुआ तब पूज्य गुरुजी ने यह संदेश भेजा था –

"मुझे यह जान कर प्रसन्नता हो रही है कि बुद्ध के महापरिनिर्वाण की २५५० वीं वार्षिकी के अवसर पर पवित्र धम्मद्वीप में 'धम्मसोभा' नामक द्वितीय विपश्यना केंद्र की स्थापना हो रही है। सहस्राब्दियों तक बुद्ध धर्म को शुद्ध रूप में सुरक्षित रखने में श्रीलंका की अहम भूमिका रही है। भारत से धर्म जब तिरोहित हो गया तब म्यंमा और श्रीलंका ने एक-दूसरे को परस्पर सहयोग कर के धम्म और विनय को शुद्ध रूप में सुरक्षित रखने का बीड़ा उठाया और उसे सहस्राब्दियों तक सुरक्षित रखा। इस सत्प्रयास के कारण ही आज शुद्ध धर्म पूरे विश्व में व्याप्त हो सका है।

जब भी मैं श्रीलंका के बारे में सोचता हूं तो इस बात से मेरा हृदय कृतज्ञता के भाव से भर जाता है कि इस धम्मद्वीप ने धम्मसंगायन की परंपरा को जीवित रखा है। भारत में यह परंपरा इसलिए लुप्तप्राय हो गयी कि यहां न तो तिपिटकधर रहे और न धर्मधर, न विनयधर और न ही सूत्रधर। धार्मिक राजा वट्टगामिनी ने न केवल धम्मसंगीति का आयोजन किया, बल्कि बुद्ध वाणी को लिपिबद्ध करवाने का महत्त्वपूर्ण काम भी किया। श्रीलंका के आलूविहार में जब यह चौथा संगायन हुआ तब बुद्ध वाणी को पहली बार ताड़पत्रों पर लिखा गया। उनके प्रयासों का ही यह सत्फल है कि भावी पीढ़ियों को शुद्ध रूप में बुद्ध की शिक्षा प्राप्त हुई। कितना बड़ा ऐतिहासिक योगदान है यह!

बुद्धघोष के समय श्रीलंका और दक्षिण भारत के संघ में बड़ा घनिष्ठ संबंध था। अब इस लाभकारी संबंध को पुनरुज्जीवित करने की आवश्यकता है। सचमुच में भिक्षु, भिक्षुणी, उपासक, उपासिका द्वारा निर्मित बुद्धसंघ एक महान समुद्र की तरह है, जहां बहुत-सी नदियां आकर मिलती हैं और एकरस हो जाती हैं। विश्वजनीन सद्धर्म में हर जाति तथा हर राष्ट्र के लोगों को शांति मिलती है। सद्धर्म लोगों को जोड़ता है, तोड़ता नहीं। बुद्ध की शिक्षा में भेदभाव को कोई स्थान नहीं है।

वर्तमान समय में श्रीलंका के लोगों में सद्धर्म को पुनरुज्जीवित करने का बड़ा उत्साह है। यह देख कर मैं श्रीलंका के शांतिमय और अनुकूल भविष्य के प्रति पूर्ण आश्वस्त हूं।

बुद्ध की विश्वजनीन शिक्षा के प्रचार-प्रसार में 'धम्मसोभा' जैसे विपश्यना केंद्र की अहम भूमिका हो और इस गौरवशाली राष्ट्र के सभी लोगों में शांति और सुख लाने में सहायक हो!

सभी प्राणी सुखी हों, शांत हों तथा दुःखमुक्त हों!

चिरं तिट्ठतु सद्धम्मो – सद्धर्म चिरकाल तक स्थित रहे!"

पूज्य गुरुजी और माताजी १० मई को लगभग ३०० विपश्यी तीर्थ-यात्रियों के साथ चेन्नई होते हुए कोलंबो पहुँचे। तीर्थयात्री हवाई

अड्डे से सीधे कैंडी के लिए रवाना हो गये, जबकि पूज्य गुरुजी सहायक दल के साथ कोलंबो में ही रुके।

दूसरे दिन ११ मई को दोपहर भोजनोपरांत 'संडे टाइम्स' के एक पत्रकार द्वारा पूज्य गुरुजी का साक्षात्कार लिया गया। शाम को 'संबोधि महाविहारय' में उनका पहला प्रवचन हुआ। संबोधि महाविहारय के संरक्षक ,उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश की ओर से उन्हें कई प्रवचन देने के लिए आमंत्रित किया गया था।

तीसरे दिन १२ मई को वैशाख पूर्णिमा थी। श्रीलंका में बुद्ध धर्म के बहुत से अनुयायी पूर्णिमा, अमावस्या तथा शुक्ल एवं कृष्ण पक्ष की अष्टमियों को उपोसथ व्रत रखते हैं। यहां वैशाख पूर्णिमा बहुत महत्त्वपूर्ण उपोसथ का दिन है। पू. गुरुजी ने आज प्रातःकाल एक प्रवचन दिया और शाम को भी व्रत-समापन प्रवचन दिया। इस पोया (उपोसथ) के दिन दिया गया पू. गुरुजी का प्रवचन श्रीलंका के दूरदर्शन पर सीधे प्रसारित किया गया।

पूज्य गुरुजी ने यह देख कर प्रसन्नता व्यक्त की कि इतने श्रद्धालु बुद्ध को सही माने में प्रणाम करने आये हैं। उनके द्वारा सिखाया गया अष्टांगिक मार्ग ऋजुमार्ग है, सीधा मार्ग है। यह सभी दुःखों से मुक्ति दिलाता है। हमें समझना चाहिए कि न कोई परमेश्वर, न देव और न ही कोई ब्रह्म हमें हमारे दुःखों से मुक्त कर सकता है। यहां तक कि स्वयं भगवान बुद्ध भी हमें मुक्त नहीं कर सकते।हमें अपनी मुक्ति के लिए स्वयं ही प्रयास करना होगा। बुद्ध तो केवल रास्ता बताते हैं। मार्ग आख्यात करते हैं। कोई वस्तुतः सुखी तभी हो सकता है जबकि वह शील का पालन कर,समाधि का अभ्यास करते हुए प्रज्ञा की भावना करे।अनुभूति के धरातल पर स्वयं अपनी प्रज्ञा जगाये। अनित्यता के स्वभाव को अपनी अनुभूति से जाने और उसके प्रति निर्वेद बना रह सके ।अर्थात समता में पुष्ट होता रहे। शील का पालन व्यक्ति समाज में शांति और सद्भाव के लिए भी करता है। लेकिन जैसे-जैसे वह यथाभूत ज्ञान-दर्शन के मार्ग पर चलता है, उसे यह स्पष्ट अनुभव होने लगता है कि सच्चे सुख के लिए शील का पालन कितना आवश्यक है। उन्होंने बताया कि कोई किस प्रकार दस दिन के शिविर को आनापान से आरंभ करता है और धीरे-धीरे मन की एकाग्रता के साथ-साथ नाक के नीचे ऊपर वाले होठ के ऊपर संवेदना की अनुभूति करने लगता है और फिर सारे शरीर में होने वाली संवेदनाओं को तटस्थभाव से देखने लगता है। इस प्रकार मन को विशुद्ध करने की यह वैज्ञानिक प्रक्रिया प्रारंभ होती है जो सारे दुःखों से मुक्त कर देती है।

जैसे-जैसे कोई धर्मपथ पर प्रगति करता है, उसके मन में निःस्वार्थ प्रेम, करुणा और सद्भावना जागने लगती है। उसके अंतर से शुद्ध प्रेम का झरना प्रवाहित होने लगता है।

अपने प्रवचनों में पूज्य गुरुदेव ने बुद्ध धर्म के संप्रदाय-विहीन स्वभाव पर जोर दिया। भगवान बुद्ध ने यह बात उन लोगों का आह्वान करते हुए विशेषरूप से कही,जो उन्हें आजमा कर भी नहीं देखना चाहते थे। उन्होंने बहुत स्पष्ट रूप से कहा कि न तो उनकी रुचि उन्हें शिष्य बनाने की है और न उन्हें उनके गुरुओं से छीनने की है। उनका उद्देश्य मात्र सभी लोगों की कुशलता है जो सब प्रकार के दुःखों की मुक्ति में निहित है। भगवान ने उन विरोधियों से कहा कि उनकी विद्या को,सात दिन के लिए ही सही, एक बार आजमा कर तो देखें। पूज्य गुरुजी ने कहा कि वे बुद्ध के उदाहरण का अनुगमन करते हैं। वे जन-जन से यही अनुरोध करते हैं कि वे मात्र दस दिन देकर इस विद्या को आजमाकर देखें। अनुकूल लगे तो ग्रहण करें अन्यथा छोड़ दें। विपश्यना बुद्ध की शिक्षा का क्रियात्मक सार है। चाहे कोई भी, हिंदू, मुसलमान, ईसाई, यहूदी, बौद्ध या अन्य कोई हो, सभी दुःखों से बाहर निकलना चाहते हैं। बुद्ध ने दुःख से बाहर आने का मार्ग बताया है। सभी आर्य अष्टांगिक मार्ग पर चल सकते हैं। भगवान बुद्ध की बुद्धिसंगत वैज्ञानिक शिक्षा को बुद्धि के स्तर पर जानना अच्छा है, पर इतने से ही काम नहीं चलेगा। इसका अभ्यास करने से ही सच्चा लाभ प्राप्त होगा। जब कोई विपश्यना का अभ्यास करता है तब उसके मन में बुद्ध के प्रति आदर और कृतज्ञता का भाव अपने आप जागता है। जो भी व्यक्ति शील, समाधि और प्रज्ञा से समन्वित धर्म मार्ग पर चलता है वह सही माने में बुद्ध का अनुयायी है, चाहे वह अपने आप को बौद्ध कहता हो या और कुछ।

शनिवार १३ मई को पूज्य गुरुजी वहां के सहायक आचार्यों, न्यासियों और धर्मसेवकों से मिले और उनके प्रश्नों के उत्तर दिये। इस सभा में बहुत से लोग कैंडी तथा अन्य स्थानों से भी भाग लेने आये थे। भिक्षु आचार्य भदंत रतनपालजी भी उपस्थित थे। पूज्य गुरुदेव ने विश्व के सभी विपश्यना केंद्रों पर एकरूपता लाने के महत्व पर प्रकाश डाला। विपश्यना सिखाने की विधि में एकरूपता हो तथा केंद्र-संचालन संबंधी बातों में भी एकरूपता हो तभी विपश्यना का प्रचार-प्रसार प्रभावी ढंग से हो सकता है। उन्होंने कहा कि बुद्ध की शिक्षा सार्वजनीन है, सब के लिए है। इसे कुछ लोगों तक ही सीमित रखना इसका अवमूल्यन करना है। संभवतः बुद्ध धर्म के भारत से लुप्त होने का अंशतः कारण यह भी है। बुद्ध सांप्रदायिकता से ऊपर हैं। उनकी शिक्षा का उद्देश्य शिष्यमंडली तैयार करना नहीं है और न ही लोगों को सांप्रदायिक समूहों में बांटना है। वरन उसका एक ही उद्देश्य दुःखों से नितांत विमुक्ति है।

पूज्य गुरुजी ने श्रीलंका के सहायक आचार्यों और धर्मसेवकों को धम्मगिरि आने के लिए उत्साहित किया और धम्मगिरि के सहायक आचार्यों और धर्मसेवकों को श्रीलंका जाने के लिए, ताकि दोनों परस्पर एक-दूसरे के अनुभवों से लाभान्वित हो सकें ।यह पूछे जाने पर कि कोई कुशल कर्म प्रारंभ करने का शुभ मुहूर्त क्या है? गुरुजी का उत्तर था –जब कोई कुशल कर्म करना प्रारंभ करता है, वही शुभ मुहूर्त हो जाता है।

इस प्रश्न के उत्तर में कि एक केंद्र के धर्मसेवकों को क्या प्रतिवर्ष एक शिविर में भाग लेना चाहिए! उन्होंने कहा कि विपश्यना केंद्र पर कर्मचारी नहीं होते। हर सेवक को साधक होना चाहिए। कुछ को मानदेय दिया जा सकता है लेकिन मूलतः वे सभी धर्मसेवक ही हैं। जब किसी न्यासी की अवधि समाप्त हो जाय तब उसे और अधिक उत्साह से सेवा करनी चाहिए। नये न्यासियों की नियुक्ति नये लोगो को उत्साहित करने के लिए की जाती है। उन्हें अवसर प्रदान करने के लिए भी ऐसा किया जाता है। पुराने न्यासियों को सेवा करते रहना चाहिए। अगर वे ऐसा नहीं करते तो यही समझना चाहिए कि वे केवल न्यासिता की सेवा कर रहे थे, धर्म की नहीं।

पूज्य गुरुजी ने यह भी कहा कि अधिक से अधिक जिप्सी शिविरों के आयोजन होते रहने चाहिए ताकि धर्म का अधिक से अधिक प्रसार हो सके ।

जब उनसे पूछा गया कि भूमिदाता को केंद्र के निकट क्यों नहीं रहना चाहिए! उनका उत्तर था कि दाता जब केंद्र के निकट रहता है तब केंद्र के प्रति अत्यधिक आसक्ति के कारण वह कभी-कभी केंद्र

के क्रिया-कलापोंमें हस्तक्षेप करने लगता है। इस प्रकार वह अपनी भी हानि करता है और दूसरों की भी।

परंपराओं का अनादर करने के प्रश्न पर उन्होंने कहा कि बिना किसी का अनादर किये इस परंपरा की शुद्धता कैसे बनाये रखी जा सकती है, यह अधिक महत्वपूर्ण है। जब कोई दूसरी परंपराओं का अनादर करता है तो वह अपनी परंपरा की भी हानि करता है। विपश्यना केंद्र पर कार्यकलापक रते समय अपनी परंपरा के सिद्धांतों का ईमानदारी से पालन करना चाहिए, परंतु ऐसा करने का यह अर्थ कदापि नहीं कि वह दूसरी परंपराओं का अनादर करे। पूज्य गुरुजी ने सम्राट अशोक का उदाहरण देकर समझाया कि उन्होंने अपने शिलालेखों पर लिखवाया था –

कोई केवल अपने ही धर्म का आदर न करे और न दूसरों के धर्म का निरादर, बल्कि उसे बहुत से कारणोंसे दूसरे के धर्मों का भी आदर करना चाहिए। ऐसा करके वह अपने धर्म की उन्नति में सहायता करता है और दूसरे धर्मों की भी सेवा करता है। अगर वह ऐसा नहीं करता तो अपने धर्म की कब्र तो खुद खोदता ही है, साथ ही दूसरे धर्मों की भी हानि करता है।

जो अपने धर्म का आदर और दूसरे धर्म का निरादर करता है वह अपने धर्म के प्रति भक्तिभाव से यह सोच कर करता है कि मैं अपने धर्म की महिमा का बखान करता हूं पर उसके कार्यकलाप उसके धर्म की बहुत गंभीर रूप से हानि करते हैं। सभी इस बात को सुनें –मेल-मिलाप (मैत्री) ही अच्छा है, झगड़ा बुरा है। दूसरे के धर्मों की बातें सुनने के लिए इच्छुक हों।

पूज्य गुरुजी ने आ. भिक्षु रतनपालजी से निवेदन किया कि वे सहायक आचार्यों, न्यासियों तथा धर्मसेवकों की देखभाल करते रहें।

विपश्यनाचार्या श्रीमती दमयंती रतवत्ते ने इस बात की शुभ सूचना दी कि शिविर में काम आने वाली संपूर्ण प्रशिक्षण सामग्री सिंहल भाषा में तैयार हो गयी है।

शाम को पूज्य गुरुजी से कई लोग मिलने आये, जिनमें प्रमुख व्यक्ति श्रीलंका की वर्तमान लोकसभा के अध्यक्ष (स्पीकर) थे। परियत्ति में उनकी बहुत रुचि है और वे सुत्त में विशारद हैं। चर्चा के दौरान पूज्य गुरुजी ने उन्हें पटिपत्ति (धर्म के अभ्यास) का महत्व बताया और उन्हें एक दस दिवसीय शिविर में भाग लेने के लिए उत्साहित किया। (यात्रा से लौटने पर समाचार मिला कि इन कार्यक्रमोंके बाद वे विपश्यना शिविर में सम्मिलित हो गये हैं और इस प्रकार धर्म के आनुभाव का एक अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया है, जो कि अपने आप में एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना है।)

'धम्मसोभा' के धर्मसेवकोंके लिए १४ मई का दिन बड़े महत्व का था। वे सभी एक महीने से अधिक समय से यहां पूज्य गुरुजी के सान्निध्य में पहला एक दिवसीय शिविर संपन्न कराने के लिए सुविधाएं जुटाने में अथक परिश्रम कर रहे थे। यह शिविर एक ऐसी खड़ी पहाड़ी पर लगना था, जहां तक पहुँचने के लिए अभी तक कोई सड़क संपर्क न था। पूज्य गुरुजी वहां के वल एक दिन के लिए जा रहे थे परंतु पांच सप्ताह में उनके लिए शौचालय आदि सभी सुविधाओं सहित निवास बना कर तैयार कर दिया गया और ऊपर तक वाहन जाने योग्य पक्की सड़क का निर्माणकार्य पूरा करके दिन-रात काम करने का एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया। इनमें पश्चिम के कुछ साधकोंने ऐसी चिलचिलाती धूप और ऊमसभरी गर्मी में बिना किसी न्यूनतम आवासीय सुविधा के भी काम को संपन्न करने में अहम भूमिका निभाई। शिविर के लिए अस्थायी तम्बू लगा कर ध्यान-कक्ष बनाया गया था और इसी प्रकार यात्रियों की सामूहिक साधना तथा पूज्य गुरुजी द्वारा उन्हें अलग से दो शब्द कहे जाने के लिए माइक आदि की योग्य व्यवस्था भी की गयी थी। इन सब के लिए धर्मसेवकोंके उत्साह की जितनी तारीफ की जाय, कम ही होगी।

भोजनोपरांत पूज्य गुरुजी ने यात्रियों को संबोधित किया, जिसमें उन्होंने सम्राट अशोक के बारे में बताते हुए कहा कि कैसे वह चंडाशोक से धम्माशोक बना और तब से विजय के लिए रक्तरंजित लड़ाइयां न लड़ने का संकल्प लिया। अब उसका एक मात्र उद्देश्य था – दूसरे देशों के लोगों का दिल जीतना। उन पर शासन नहीं करना, बल्कि उनकी सेवा करना। उसके पुत्र भिक्षु महेंद्र धर्म में पक कर धर्मदूत बन कर श्रीलंका आये और श्रीलंका ने धर्म को ग्रहण कर उसे अक्षुण्ण रखने में खूब अध्यवसाय किया। अशोक की पुत्री संघमित्रा इस धर्मद्वीप में मूल बोधिवृक्ष की एक शाखा ले कर आयी और श्रीलंका की पुरानी राजधानी अनुराधपुरा में इसका रोपण किया गया, जो कि लगभग २३०० वर्ष पश्चात आज भी जीवित है। संघमित्रा ने यहां की महिलाओं को धर्म में पुष्ट करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

जब भारत में त्रिपिटक धरों और पिटक धरों की परंपरा लुप्त हो गयी तब श्रीलंका में ही चौथी संगीति हुई, जिसमें सर्वप्रथम क्रमिक ढंग से सारा तिपिटक लिखा गया। बुद्ध द्वारा दिये गये उपदेशों के अभाव में बुद्ध धर्म का अभ्यास भी लुप्त हो जाता। परंतु म्यंमा और श्रीलंका ने धर्म तथा विनय को सुरक्षित रखने में एक-दूसरे को सहयोग किया। इसके अतिरिक्त म्यंमा ने विपश्यना की शुद्धता तथा इसके अभ्यास की निरंतरता को कुछ लोगों तक सीमित रखते हुए अक्षुण्ण बनाये रखा।

शाम को पूज्य गुरुदेव ने एक दिवसीय शिविर में आये साधकोंको मंगल मैत्री देते हुए अन्य स्थानीय लोगों के लिए भी एक छोटा-सा प्रवचन दिया। अनेकों सफेद वस्त्रधारी गृहस्थ तथा कई दर्जन भिक्षु उस हरीभरी पहाड़ी पर लकड़ी और पत्तों से बने एक छप्पर के नीचे एकत्र थे। यह दृश्य बड़ा मनोहारी था। बुद्धकाल में गृहस्थ सफेद वस्त्र पहनते थे। उन्हें अक्सर सफेद वस्त्रधारी गृहस्थ कहा जाता था। पूज्य गुरुदेव चल-कुर्सी पर बैठे हुए ही एक दिवसीय शिविर के स्थान पर आये और मैत्री व प्रवचन दिया। उन्होंने कहा कि मैत्री को प्रभावी बनाने के लिए इसकी भावना हृदय के अंतस्तल से की जानी चाहिए। मैत्री का अभ्यास संवेदना के प्रति जागरूक रह कर ही करना चाहिए। ...

(क्रमशः अगले अंक में)

विपश्यना पत्र के स्वामित्व आदि का विवरण

समाचार पत्र का नाम : **"विपश्यना"**
भाषा : **हिंदी**
प्रकाशन का नियत काल **मासिक** (प्रत्येक पूर्णिमा)
प्रकाशन का स्थान : विपश्यना विशोधन विन्यास, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३.
मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक का नाम : राम प्रताप यादव
राष्ट्रीयता : भारतीय
मुद्रण का स्थान : अक्षरचित्र, बी-६९, सातपुर, नाशिक-७.
पत्रिक के मालिक का नाम : **विपश्यना विशोधन विन्यास,**
(रजि. मुख्य कार्यालय):
ग्रीन हाऊस, २ रा माला,
ग्रीन स्ट्रीट, फोर्ट, मुंबई-४०००२३.

मैं, राम प्रताप यादव एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि ऊपर दिया गया विवरण मेरी अधिकतम जानकारी और विश्वास के अनुसार सत्य है।

राम प्रताप यादव,
मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक
दि. २९-५-२००६.

इंदौर में नये विपश्यना केंद्र 'धम्म मालवा' की स्थापना

इंदौर के हवाई अड्डे से लगभग ६ कि.मी. की दूरी पर ग्राम जम्बूडी हप्सी, हातोद रोड, गोम्मटगिरि के आगे, पितृ पर्वत की गोद में 'धम्म मालवा' इंदौर विपश्यना केंद्र का निर्माण होने जा रहा है। इसके प्रथम चरण में धम्म हॉल का निर्माण होगा। १२० साधकों के लिए निवास, भोजनालय, कार्यालय, पगोडा-शून्यागार, आचार्यनिवासादि पर लगभग दो करोड़ की लागत का अनुमान है।

साधकों के लिए पुण्यार्जन का सुअवसर उपलब्ध है। **"इंदौर विपश्यना इंटरनेशनल फाउंडेशन ट्रस्ट"** को आयकर की धारा ८०-जी के अंतर्गत आयकर सुविधा प्राप्त है। **संपर्क** – इंदौर विपश्यना केंद्र, ५८२, एम. जी. रोड (वेब दुनिया), 'लाभ गंगा', इंदौर (म.प्र.)

केरल में प्रथम नवोदित विपश्यना केंद्र

'केरल विपश्यना समिति' ने ग्राम चेरीनाड, ता. चेंगन्नूर, जिला- अलेप्पी में पांच एकड़ जमीन खरीद लिया है। यह चेंगन्नूर रेल्वे स्टे. से आठ कि.मी. दूर है तथा कोची और त्रिवेंद्रम हवाई अड्डों से लगभग चार घंटे की दूरी पर। सड़क-परिवहन की भी अच्छी सुविधा उपलब्ध है। जमीन की लागत बत्तीस लाख रु. आयी है। **'केरल विपश्यना समिति'** रजिस्टर्ड ट्रस्ट के रूप में १९९१ से ही उस क्षेत्र में शिविरों का आयोजन करती आ रही है। अब तक वहां ६५ जिप्सी शिविर लग चुके हैं। अब शीघ्र ही केंद्र-निर्माण एवं केंद्र पर शिविर लगाने की योजना बनेगी।

केंद्र निर्माण में पुण्यार्जन के इच्छुक साधक निम्न पते पर संपर्क कर सकते हैं – Mr. B. Ravindran, Tel: 0484 2539891, Mobile: 098465-69891. (**Kerala Vipassana Samiti**, Lord Krishna Bank Kaloor branch, Kochi 682 017, SB account no: 310.1.30163)

नए उत्तरदायित्व - वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्री के. रविकुमार रेड्डी, इलूरु, (आंध्र प्र.)
२. श्रीमती एस. सरस्वती रेड्डी, हैदराबाद
3. Mr. Paul Topham, *UK*
4. Mr. Kenneth Truedsson, *Sweden*

नव नियुक्तियां - बाल शिविर-शिक्षक

१-२. श्री उदाराम एवं श्रीमती विजया वावरे, भोपाल
३-४. श्री बी. एस. अचुथा एवं श्रीमती सरस्वती नाईक, भोपाल
५. श्रीमती नीरू ए. जिंदल, चंडीगढ़
6. Mr. Patrick Murphy, *USA* 7. Mrs. Tracy Hudson, *USA*

दोहे धर्म के

चल साधक चलते रहें, देश और परदेश।
धरम चारिका से कटें, सब के मन के क्लेश॥
उठो! जगो! आलस तजो! मंगल हुआ प्रभात।
मिटा अँधेरा पाप का, बीती काली रात॥
विमल धरम का ज्योतिधर, मंगल जगा प्रभात।
दुखहर, भयहर, तिमिरहर, अरुण तरुण नवजात॥
एक बार फिर से खुले, जन हित अमृत द्वार।
हर्ष और उल्लास का, उमड़ा उदधि अपार॥
पाप शाप संताप के, बुझ जाएं अंगार।
जग मरुधर पर बह चली, पुण्य धर्म की धार॥
धर्म पुनः जाग्रत हुआ, खुले मुक्ति के द्वार।
सुनों कानवालों सुनो, सत्य धर्म का सार॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा.) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई-४०० ०१८
फोनः २४९३ ८८९३, फैक्सः २४९३ ६१६६
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

कितना दिन भटकत फिर्‌यो, आंधी गळियां मांय।
इब तो पायो राजपथ, पाछो मुड़नो नांय॥
चल साधक चलता रवां, जन सेवा रै काम।
इब क्यां रो बिसराम है, इब क्यां रो आराम॥
जन जन री सेवा करां, यो जीवन रो ध्येय।
यो ही म्हारो स्रेय है, यो ही म्हारो प्रेय॥
चल भिक्खू चलता रवां, अबै कठै बिसराम?
बहुजन हितसुख कारणै, है आराम हराम॥
कर तैयारी कूच री, छोड़ सकल जंजाळ।
प्रतिपल प्रग्या ही जगा, अंतर होस सँभाळ॥
बाहर उळझण छोड़ कर, भीतर चित्त सुधार।
भीतर सुधर्‌यां मानखा, बारै हुवै सुधार॥

देबेनरा मून्दड़ा परिवार
गोश्वारा रोड, पंडित मेघराज मार्ग,
विराट नगर, नेपाल.
फोनः ०९९-२१-५२७६७१
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, दूरभाष : (०२५५३) २४४०८६, २४४०७६.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, ६९- बी रोड, सातपुर, नाशिक-४२२००७. **बुद्धवर्ष २५५०, ज्येष्ठ पूर्णिमा, ११ जून, २००६**

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-, US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. ५००/-, US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. १९१५६/७१**. Regn. No. **LII/REN/RNP-46/2006-08**

Licenced to post w**ithout Prepayment of postage** -- Licence number-- **LII/RNP-WPP-03**

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (०२५५३) २४४०७६, २४४०८६
फैक्स : (०२५५३) २४४१७६
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vri.dhamma.org